ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.20, No.4, Oct. –Dec., 2025/9

बृहत्त्रयी में नायक विवेचन

सरोज शुक्ला एवं अमित कुमार तिवारी

https://doi.org/ 10.61410/had.v20i4.254

सारांश :

त्रयी शब्द का अर्थ तीन का समूह है भारतीय संस्कृति में तीन (त्रयी) के समूह को शुभ का संकेतक माना गया है। बृहत्त्रीय के अन्तर्गत संस्कृत साहित्य के निम्नलिखित तीन महाकाव्य आते हैं–

1. भारविकृत किरातार्जुनीय
2. माघकृत, शिशुपालवध
3. श्रीहर्षकृत, नैषधीयचरित्र

तीनों की कथा इतिहासोद्भव है। तीनों ही नायक धीरोदात्त कोटि के हैं भारवि और श्रीहर्ष के काव्यों का नामकरण नायक के नाम पर हुआ है माघ के काव्य का नामकरण घटना के आधार पर किरातार्जुनीय एवं नैषध के नायक क्रमशः अर्जुन एवं नल सछंश क्षत्रिय है। शिशुपाल वध के नायक श्रीकृष्ण देव श्रेणी में आते हैं। तीनों रुढ़वंश हैं। तीनों की शारीरिक शोभा का वर्णन अतिविस्तार से किया गया है। तीनों तेजस्वी गुण सम्पन्न शास्त्र–चक्षु शूर, त्यागी, गुणानुरागी तथा शास्त्रोक्त नियमों के पालक हैं। तीनों ऋषि, मुनि तथा देवादि का सत्कार करने में प्रवीण हैं आज्ञाकारी तथा विनीत हैं प्रस्तुत लेख में बृहत्त्रयी के ग्रन्थों के तीनों नायकों के चरित्र विधान पर चर्चा की गई है। इस लेख के माध्यम से इन महत्वपूर्ण चरित्रों का विवेचन तुलनात्मक रुप से किया गया है।

मुख्य शब्द– नायक, चरित्र, धीरोदात्त, पराक्रम, सौन्दर्य कोटि, तीक्ष्णता आदि

किरातार्जुनीय में चित्रित अर्जुन धीरोदात्त कोटि के नायक हैं, जिनमें आचार्यों द्वारा निरूपित प्रायः सभी गुण विद्यमान हैं। अर्जुन की शारीरिक शोभा का वर्णन करते हुए भारवि ने उनके मरकत–मणि–सदृश शरीर, पिङ्गल–वर्ण जटाएँ तथा उनके तेजस्वी रूप का वर्णन अतिसुन्दर उपमानों द्वारा प्रस्तुत किया है। अर्जुन के शरीर का रङ्ग मरकत–मणि के समान हैं तथा नियमानुकूल अभिषेक करने से पिङ्गल वर्ण की जटा धारण करते हुए वे उस तमाल वृक्ष से उपमित होते हैं, जिसके शिखाग्र पर अंशुमाली की किरणें व्याप्त हो रही हैं। कपिश–वर्ण की लम्बी–लम्बी जटाओं का जाल धारण किए हुए तथा गङ्गा के तट पर अभिलाष सिद्धि के लिए उत्कट तपश्चर्या करते हुए अर्जुन वेदी के समीप ज्वाला–जाल से विस्तृत हवि की अभिलाषा करते हुए अग्निदेव के समान प्रतीत होते हैं। इसी प्रकार किसी समय जिनके जटा–भारों से अरूणवर्ण की किरणें निकल रहीं थीं और धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ी हुई थी, ऐसे अर्जुन को लोगों ने दानवों के नगर को नष्ट भ्रष्ट करने की इच्छा करने वाले साक्षात् शिव के समान देखा, भेद केवल इतना था कि अर्जुन के ललाट–स्थल में तीसरा नेत्र नहीं था। अर्जुन युवावस्था में वर्तमान है। अप्सरायें कृत्रिम मोहन करने की अभिलाषा से अर्जुन के निकट आई किन्तु ज्यों ही उन्होंने अर्जुन को देखा, त्यों ही उनमें काम का अवतार हो गया, क्योंकि युवावस्था की रम्य शोभा

- **शोधछात्रा –डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या उ. प्र.**
- **शोध निर्देशक –असि. प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, का. सु. साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या, उ. प्र.**

मन का हरण कर लेती है। अर्जुन के अङ्ग प्रत्यङ्ग विकसित कमल–समूह तथा सप्तवर्ण–स्तवक से अधिक सुन्दर हैं। उनका स्कन्ध–प्रदेश बलीवर्द–सदृश है, ग्रीवा स्थूल है तथा पत्थरों की चट्टान के सदृश उनका वक्षःस्थल है, जो उनकी महासत्वता का सूचक है। उनकी भुजाएँ भयङ्कर सर्प के समान हैं। सब मिलाकर अर्जुन की आकृति रूचिर एवं उदार है।[1]

अर्जुन का पराक्रम दर्शनीय है। पूर्वकाल में उन्होंने अपने पराक्रम से सुमेरू के उत्तर–निवासियों पर विजय पताका आरोपित कर महती सम्पत्ति युधिष्ठिर को दी थी। अर्जुन के पराक्रम को जानते हुए व्यास मन्त्र विद्या के अनुसार उग्र तपस्यार्चा करके पाशुपतास्त्र रूप साधन के प्राप्त करने के विषय में कहते हैं। तपस्यर्थ अर्जुन के प्रस्थान करने पर उनके चारों भाइयों को दुःख होता है, किन्तु वे अर्जुन के शौर्य को जानते थे, इसलिए दुःख अधिक समय तक उनके पास नहीं ठहर सका। शत्रु–कृत दुर्दशा को दूर करने का भार अर्जुन को ही सौंपा गया, इसका कारण उनका पराक्रम एवं उनकी योग्यता ही है।[2]

अर्जुन एक क्षत्रिय राजवंशी हैं। ऋषि, मुनि, ब्राह्मणादि का यथाविधि सत्कार करना वे भली–भाँति जानते हैं। आज्ञाकारिता तथा विनीतता आदि गुण उनमें सतत वर्तमान हैं। अर्जुन एक विद्यार्थी की तरह ज्येष्ठ भ्राता युधिष्ठिर की जाओ, तपस्या करो, इस आज्ञा को स्वीकार कर विनम्र भाव से विद्या–ग्रहणार्थ महर्षि व्यास के समक्ष उपस्थित होते हैं। अर्जुन आज्ञा–पालन को विशेष महत्व प्रदान करते हैं। वे स्वयं कहते हैं कि मैं अपने ज्येष्ठ–भ्राता की आज्ञा का पालन करने के लिए तैयार हूँ। अर्जुन की सम्मत्ति में जिस विशुद्ध वंश में विपत्ति के समय जो व्यक्ति स्वामी की आज्ञा का उल्लंघन करता है, वह चन्द्रमा के कलंक के समान है। अर्जुन ब्राह्मण–वेशधारी इन्द्र को उत्तर देते हुए कहते हैं वत्स। छिद्रान्वेषणकारियों को अवसर न देते हुए विजयार्थ तपस्चरण करो, इस प्रकार की शिक्षा महर्षि व्यास ने मुझे दी है। अतएवं पराक्रमशाली इस वराह का वध किए बिना मैं किसी अन्य उपाय से अपने व्रत की रक्षा नहीं कर सकता। अर्जुन का यह वचन उनकी आज्ञाकारिता का सुन्दर उदाहरण है। अर्जुन अतिथि सत्कार करने में प्रवीण हैं। वे ब्राह्मण–वेशधारी इन्द्र की अतिथि सत्कार द्वारा पूजा कर उन्हें आसन प्रदान करते हैं। किरात वेषधारी शिव जब अर्जुन के पराक्रम से प्रसन्न हो अपने वास्तविक रूप में प्रकट होते हैं तब अर्जुन उन्हें सादर प्रणाम करते हैं एवं उनके स्वागतार्थ विस्तार से उनकी स्तुति करते हैं।[3]

अर्जुन किसी भी कार्य को कुशलता पूर्वक सम्पादित करना भली प्रकार से जानते हैं। वे आरम्भ किए गये कार्य को बीच में नहीं छोड़ते और न ही कष्टों से व्यथित होते हैं। वे इन्द्र तथा शिव को प्रसन्न करने के लिए विधिवत् तपस्यचर्या करते हैं और अन्त में जब शिव उन पर प्रसन्न होते हैं, तब वे उनकी स्तुति करते हैं तथा उनसे शस्त्र–सम्पत्ति की प्राप्ति के लिए याचना करते हैं। शंकर उन्हें धनुर्वेद पढ़ाते हैं तथा पाशुपतास्त्र प्रदान करते हैं। इन्द्रादि लोकपालों से भी उन्हें विविध अस्त्रों की प्राप्ति होती है और अन्त में शिव का आशीर्वाद प्राप्त कर उन्हें विजय प्राप्त होती है। इस प्रकार किरातार्जुनीय में अर्जुन एक महापुरुष के रूप में चित्रित किए गए हैं, जिनमें धीरोदात्त नायक के सभी गुण विद्यमान हैं।

शिशुपालवध महाकाव्य के नायक श्रीकृष्ण एक अवतारी पुरुष हैं वे देव हैं। उनका परिचय उद्धव के इस कथन से ही प्राप्त हो जाता है।

तीक्ष्णा नारून्तुदा बुद्धिः कर्म शान्तं प्रतापवत्।

नोपतापि मनः सोष्म वागेका वाग्मिनः सतः।।[4]

अर्थात् सज्जनों की बुद्धि तीक्ष्ण होती है, किन्तु मर्मस्थल को पीड़ित करने वाली नहीं होती, कर्म प्रताप–युक्त होता है, किन्तु शान्त (सिंहादि के समान हिंसक नहीं) होता है। मन कुल–शीलादि के अभिमान से युक्त होने से ऊष्ण होता है, किन्तु दूसरे को सन्तप्त करने वाला नहीं होता और वाग्मी का वचन एक होता है। (सज्जन पुरुष एक बार जो कह देते हैं, उसका अन्त तक पालन करते हैं) उद्धव का यह वचन शिशुपाल वध के नायक श्रीकृष्ण के अनेक गुणों का परिचय देने में पूर्ण समर्थ है।

शिशुपाल के वध के वर्णन प्रसंग में श्रीकृष्ण का वर्णन जहाँ–जहाँ आया है, उन स्थानों पर प्राप्त श्रीकृष्ण के वर्णन से शिशुपाल वध महाकाव्य में प्राप्त श्रीकृष्ण का वर्णन भिन्न है। पुराणों में श्रीकृष्ण का ईश्वर–रूप अभिव्यक्त है। भागवत में श्रीकृष्ण ने जिस प्रकार चक्र द्वारा शिशुपाल का वध किया, वह भी उनकी ईश्वरीय शक्ति को प्रकट करता है। महाभारत में श्रीकृष्ण शिशुपाल की क्रोधपूर्ण बातों और अपशब्दों (गालियों) को सुनकर अपने सुदर्शन चक्र का स्मरण करते हैं और जब वह उनके हाथ में आ जाता है जब वे उच्च स्वर से यह घोषणा करते हैं –शिशुपाल की माता ने मुझसे इसके सौ अपराध क्षमा करने की याचना की थी। अभी तक मैंने इसके सौ अपराधों के लिए क्षमा किया किन्तु अब यह सीमा का अतिक्रमण कर रहा है। अतः अब मैं आप लोगों के समक्ष इसका अन्त करूंगा। यह कहकर उन्होंने उसका सिर काट दिया। इस प्रकार महाभारत में भी उनका ईश्वर रूप ही अधिक व्यक्त होता है। माघ के शिशुपालवध में चित्रित श्रीकृष्ण में ईश्वरीय से नृपत्व या नरत्व अधिक है। वे उदार–चरित, दुष्टों के शत्रु और साधुओं के मित्र आदर्श राजा हैं।

शिशुपालवध में चित्रित श्रीकृष्ण धीरोदात्त कोटि के नायक हैं, जिनमें आचार्यो द्वारा निरूपित प्रायः सभी गुण विद्यमान हैं।[5] श्रीकृष्ण की शारीरिक शोभा का वर्णन करते हुए माघ ने उनके श्याम–वर्ण तेजस्वी रूप को अतिसुन्दर उपमानों द्वारा प्रस्तुत किया है। श्रीकृष्ण अंजन पर्वत (नील–गिरि), इन्द्र–नील–मणि की कान्ति, नवीन (जल–पूर्ण) मेघ, पूर्ण–चन्द्र के लांछन, विकसित तमाल पुष्प तथा अतसी पुष्प के समान स्निग्ध श्यामल कान्ति वाले हैं। वे तपाये गए सुवर्ण के समान देदीप्यमान तथा हरिताल (कर्पूर) के रंग का सुन्दर पीताम्बर धारण किए हुए हैं और इस प्रकार पीताम्बर–धारी श्याम वर्ण श्रीकृष्ण की शोभा, फैलने वाले कमल–परागों से चित्रित यमुना की जलराशि के समान है। उनके केश अलि–कुल के समान काले तथा सुवासित हैं। श्रीकृष्ण के हाथ कमल के समान सुन्दर हैं। उनका वक्षःस्थल कपाट के समान विस्तीर्ण एवं मनोरम है। उनका वक्षःस्थल उनकी महा–सत्वता का सूचक है। सब मिलाकर श्रीकृष्ण की आकृति अत्यन्त भव्य है।[6] इस प्रकार शिशुपालवध में श्रीकृष्ण का नर–रूप में वीर–चरित्र अंकित है।[7] उनकी सहनशक्ति अद्भुत है। वे सब कुछ सहन करते जाते हैं और समय पर मुस्कराते हुए शत्रु का संहार कर देते हैं। पुराणों में महाभारत में तथा भागवत में श्रीकृष्ण का जो चरित्र चित्रित है, उससे कहीं अधिक उच्च तथा स्वाभाविक चरित्र माघ ने अपने काव्य में चित्रित किया है।

नैषधचरित के नायक नल एक धीरोदात्त नायक हैं। आचार्यो द्वारा परिगणित नायक के सभी गुण उनमें पाये जाते हैं। श्रीहर्ष नें नल को रुप, गुण, और शील–तीनों का अधिष्ठान बताया है।

क्रियेत् चेत् साधुविभक्तिचिन्ता व्यक्तिस्तदा सा प्रथमाभिधेया।

या स्वौजसां साधयितुं विलासैस्तावत्क्षमा नामपवं बहु स्यात्।।[8]

अर्थात् यदि सज्जनों (महापुरुषों) के विभाजन का विचार किया जाय तो वह व्यक्ति (नल) प्रथम व्यक्ति होगा जो अपने पराक्रम के विलासों से असंख्य शत्रुओं के पदों को अपने अधीन करने में पूर्ण समर्थ हुआ है – नल के विषय में कही गई हंस की यह उक्ति उनकी महापुरुषता का सूचक है।

कवि ने अपने इस आदर्श को नल के मुख से हंस के प्रति व्यक्त कराया है – हंस! तुम्हारा (सुवर्ण–मय) रूप अतुलनीय है तथा तुम्हारी सुशीलता अवर्णनीय है। आकृति (रूप) में गुण रहते हैं – सामुद्रिक शास्त्र के सारभूत इस नियम के तुम्हीं उदाहरण हो।[9]

नैषधीयचरितं में नल का चरित्र आरम्भ से अन्त तक एक रूप रहा है। काव्य के प्रारम्भ में ही नल को पुण्य–लोक, तेजस्वी, गुणसम्पन्न, विद्वान, शास्त्र–चक्षु सैन्य–शक्ति सम्पन्न, शूर, अच्छे प्रजा–पालक त्यागी तथा गुणानुरागी के रूप में चित्रित किया गया है। सूर्य–सदृश तेजस्वी राजा नल निरन्तर अभ्यास करने वाले कवि कथा समय को व्यतीत करते हुए उसी प्रकार समृद्धि को प्राप्त कर रहे थे, जिस प्रकार निरन्तर समीप में स्थित शुक्र तथा बुध नामक ग्रह–द्वय के साथ समय को व्यतीत करते हुए तेजस्वी सूर्य प्रतिदिन उदय को प्राप्त करते हैं। दमयन्ती के अनुराग में अत्यन्त काम–तप्त होकर भी नल विदर्भराज से उनकी कन्या के लिए याचना नहीं करते। नल की मानशीलता का यह सुन्दर उदाहरण है। नल की मानिता को स्पष्ट करते हुए कवि ने लिखा है कि मानी लोग प्राण त्याग भले ही कर दें, किन्तु एक मात्र अयाचना के अपने नियम का त्याग नहीं करते।[10]

नल एक उत्तम कोटि के राजा के रूप में चित्रित किए गए हैं। दमयन्ती के प्रेम में अत्यन्त व्याकुल होकर भी वे अपनी काम–जन्य अधीरता को छिपाते हैं। नल की इस अधीरता को केवल दो ही व्यक्ति जानते थे – नल के जागरण की साक्षिणी रात्रि तथा शशांक कोमल उनकी शय्या। दमयन्ती के प्रति प्रेम ने नल की समस्त चेतना पर अधिकार कर लिया था। वे जहाँ कहीं भी रहते, उनका कोई न कोई काम चिन्ह प्रकट हो ही जाता किन्तु वे तरह–तरह के बहाने बनाकर अपने अनङ्ग चिन्हों को छिपाते हैं। वे अपने किसी भी क्रिया–कलाप अथवा संकेत द्वारा दमयन्ती विषयक प्रेम को प्रकट नहीं करते और जब अपने अनङ्ग–चिन्हों को छिपाने में बिल्कुल असमर्थ हो जाते हैं तब वे उपवन–विहार के बहाने निर्जन स्थान में जाने की इच्छा करते हैं। इस प्रकार दमयन्ती के प्रति नल के अनुराग को क्रमशः बढ़ता हुआ दिखाया गया है। इस प्रसंग में नल के निःश्वास तथा पाण्डुता, इन काम–चिह्नों का, उन्माद और मूर्च्छा आदि काम–दशाओं का तथा नल द्वारा उनके छिपाये जाने का सुन्दर वर्णन किया गया है। नल ने (भावनावश) मिथ्या दृष्ट प्रिया से जो कहा तथा वीणा–वादकों के पंचम–स्वर की मूर्छनाओं के अवसर पर जन–सभा में ही जो मूर्च्छित हुए, उसे भाग्य ही छिपा सका अर्थात् नल के उक्त भाषण तथा मूर्च्छा को संयोग–वश लोग देख नहीं सके। प्रयत्नपूर्वक छिपाने पर भी नल के अनङ्ग–चिन्ह प्रकट हो जाते हैं, तब वे लज्जित हो जाते है।

नल के दूत कार्य से प्रसन्न होकर इन्द्रादि चारों देव तथा सरस्वती उन्हें वर प्रदान करती हैं। श्रीहर्ष ने नैषधचरित में नल को केवल एक सफल प्रेमी के रूप में ही चित्रित नहीं किया, अपितु समग्र अट्ठारह तथा बीसवें सर्ग में उनके एक सफल गृहस्थ के रूप को भी प्रस्तुत किया है। इक्कीसवें सर्ग में उनको आदर्श चक्रवर्ती नरेश के रूप में चित्रित किया गया है। राजाओं से उपहार लेकर पुनः उन्हीं

को देना और उनसे उनका कुशल पूछना, अधीनस्थ राजाओं के प्रति उनके प्रेम और उनकी वत्सलता का सूचक है। नल का देव–पूजा–गृह में जाकर पूजन करना उनकी धर्म परायणता तथा नियम–बद्ध जीवन का द्योतक है। शिष्य राजकुमारों के लिए शास्त्रोपदेश करना उनके शौर्य का परिचायक है।

तीनों नायकों के चरित्र चित्रणों का तुलनात्मक विवेचन –

किरातार्जुनीय के नायक अर्जुन, शिशुपालवध के नायक श्रीकृष्ण तथा नैषधचरित के नायक नल के चरित्र पर प्रकाश डाला जा चुका है। तीनों नायकों के चरित्रों का तुलनात्मक विवेचन यहाँ प्रसंग प्राप्त है। तीनों नायकों के चरित्र को प्रस्तुत करते समय उनकी सभी विशषेताओं का उल्लेख अतिविस्तार से किया जा चुका है। अतः यहाँ उन्हीं की तुलना में उनकी विशेषताओं की ओर संक्षेप में ही निर्देश पर्याप्त होगा। तीनों नायकों की चरित्र–गत समानताएँ इस प्रकार हैं –

तीनों धीरोदात्त कोटि के नायक हैं, जिनमें आचार्यों द्वारा निरूपित नायक के प्रायः सभी गुण विद्यमान हैं। तीनों रूढ़वंश हैं। तीनों की शारीरिक शोभा का वर्णन अतिविस्तार से किया गया है। तीनों तेजस्वी, गुणसम्पन्न, शास्त्र–चक्षु, शूर, त्यागी, गुणानुरागी तथा शास्त्रोक्त नियमों के पालक हैं। तीनों ऋषि, मुनि तथा देवादि का सत्कार करने में प्रवीण हैं। आज्ञाकारी तथा विनीत हैं। अर्जुन युधिष्ठिर तथा व्यास की आज्ञा का पालन करते हैं। वे ब्राह्मण–वेष धारी इन्द्र का यथाविधि आतिथ्य करते हैं। श्रीकृष्ण नारद का विधिवत् पूजन करते हैं तथा इन्द्र की आज्ञा का पालन करते हैं। नल इन्द्रादि देवों का स्वागत करते हैं तथा उनकी आज्ञा का पालन करते हैं। तीनों पशु–पक्षी प्रकृति तथा समाज के लोगों से आकृष्ट होते हैं। इन्द्रकील की ओर जाते हुए अर्जुन मार्ग में राज हंसों, मछलियों, गायों तथा हरिणियों को देखकर अतिप्रसन्न होते हैं। विकसित कमलों तथा क्षौम–सदृश सिकता राशि के प्रति वे निर्निमेष दृष्टि से देखते हैं। इन्द्रप्रस्थ की ओर जाते हुए श्रीकृष्ण रैवतक पर्वत पर छः ऋतुओं को उपस्थित देखकर उनकी शोभा का आनन्द लेने के लिए उत्कण्ठित हो जाते हैं। उपवन–विहार करते हुए नल सरोवर में हंस को देखकर कौतुक से भर उठते हैं। तीनों कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अद्भुत धैर्यशाली हैं। तीनों में गाम्भीर्य, माधुर्य तथा स्थैर्य नामक गुण पाये जाते हैं। तीनों स्वाभिमानी तथा दृढ़–प्रतिज्ञ हैं। तीनों मधुर भाषी हैं। तीनों का ही वाक्चातुर्य प्रशंसनीय है। अर्जुन में तर्क–वितर्क करने की अद्भुत क्षमता है। श्रीकृष्ण एक कुशल वक्ता है और नल देवों को उनके कपट के अनुरूप ही उत्तर देने में अपनी योग्यता का अच्छा परिचय देते हैं। श्रीकृष्ण और नल श्लेषोक्ति और वक्रोक्ति को समझाने में अतिकुशल हैं। तीनों कर्तव्य–परायण तथा दूसरों के सहायक हैं। तीनों का हृदय दया तथा उदारता से परिपूर्ण है। तीनों में शोभा नामक सात्विक गुण विद्यमान है।

उग्र तपस्यचर्या करते हुए अर्जुन की इन्द्र तथा शिव परीक्षा लेते हैं। देवगण नल की परीक्षा लेते हैं। अर्जुन और नल दोनों ही परीक्षा में विजयी होते हैं। अर्जुन और श्रीकृष्ण रण–भूमि के कुशल योद्धा हैं। श्रीकृष्ण इस संसार के शासक हैं और नल अपने राज्य के शासक हैं। अर्जुन उग्र तपस्यचर्या करने में प्रवीण हैं, श्रीकृष्ण कुशल राजनीतिज्ञ हैं तथा नल प्रजा–पालक चक्रवर्ती नरेश हैं। अर्जुन को शिव से पाशुपतास्त्र–सहित धनुर्वेद प्राप्ति तथा इन्द्रादि लोकपालों से विविधास्त्र प्राप्ति होती है। नल को इन्द्रादि देवों तथा देवी सरस्वती से विविध वर प्राप्ति होती है। उधर श्रीकृष्ण शिशुपाल के वध द्वारा लोगों को अभय प्रदान करते हैं। तीनों ही महापुरूष के रूप में चित्रित किए गए हैं। तीनों नायकों की चरित्रगत कुछ भिन्नताएँ भी हैं –

नल दमयन्ती में आसक्त हैं। नैषधचरित में नल की काम–दशाओं का वर्णन प्राप्त होता है। किरातार्जुनीय और शिशुपाल में ऐसा कोई प्रसंग नही है। अनङ्ग–चिह्न प्रकट हो जाने पर नल लज्जित हो जाते हैं। इसी प्रकार दमयन्ती के अन्तः पुर में सुन्दरियों की सविश्रम्भ एकान्त चेष्टाओं को देखकर भी नल लज्जित हो जाते हैं। उनका इस प्रकार का लज्जित होना उनके उत्तम नायकत्व का सूचक है। नल की वदान्यता का अनेक बार उल्लेख हुआ है। अर्जुन और श्रीकृष्ण की वदान्यता का कोई विशेष उल्लेख प्राप्त नहीं होता। श्रीकृष्ण इन्द्रप्रस्थ पहुँचकर सब की कुशलता पूछते हैं। इस प्रसंग में उनकी सज्जनता तथा स्मरण शक्ति प्रशंसनीय है। श्रीकृष्ण अपनी प्रसंशा के प्रति उदासीन है। इस प्रकार तीनों नायकों में अनेक समानताएं तथा कुछ भिन्नतांए परिलक्षित होती है।

संदर्भ सूची

1. किरातार्जुनीयम् 6/1
2. किरातार्जुनीयम् 3/50
3. किरातार्जुनीयम् , 18/22
4. किरातार्जुनीयम, 18/43
5. दशरूपक, 2/1–2
6. शिशुपालवधम् 3/13
7. शिशुपालवधम्, 20/79
8. नैषधीयचरित् – 3/23
9. नैषधीयचरित, 2/51
10. नैषधीयचरित, 1/50